प्रस्तावना

प्रकाश अर्थात अंधकार को दूर करने, वस्तु विशेष को उद्घाटित करने, वस्तु को उभारने इत्यादि का माध्यम है। रंगमंच जहां रेखाएँ, चरित्र, मंच की भाषा एक चित्र का निर्माण करती है वहाँ प्रकाश की भूमिका इन्हें उभारने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। एक समय था जब रंगमंच पर प्रकाश व्यवस्था को इतना महत्व नहीं दिया जाता था, चूंकि नाटक रात में ही होते थे इसलिए किसी न किसी तरह रोशनी की व्यवस्था करनी ही पड़ती थी। दर्शक मंच पर अभिनेताओं एवं वस्तुओं को स्पष्ट रूप से देख सके इसके लिए मशाल, दीप इत्यादि का प्रयोग होता था। समय बदला तो प्रकाश के स्रोतों पर भी कार्य हुआ। धीरे-धीरे मंच पर प्रकाश व्यवस्था को महत्वपूर्ण अंग के रूप में माना जाने लगा। प्रकाश स्रोतों को और अधिक विशिष्ट और उपयोगी बनाने के लिए कार्य हुए। प्रकाश स्रोतों के बदलते एवं विकसित होते स्वरूप ने रंगमंच की पूरी तस्वीर को बदला। अब प्रकाश व्यवस्था का कार्य केवल वस्तुओं, अभिनेताओं को अंधेरे से प्रकाश में लाना मात्र नहीं रह गया था बल्कि अब आधुनिक रंगमंच में प्रकाश व्यवस्था का कार्य चरित्रों के मनोभाव, वातावरण निर्माण से आगे जाते हुए दृश्य विशेष का भी निर्माण किया जाने लगा है।

प्रकाश विन्यास जिसका जिक्र, जिसकी महत्वता का जिक्र भारतीय नाट्य परंपरा के आदि ग्रन्थ भरत के नाट्यशास्त्र में भी देखने को मिलता है. प्रारंभ में प्रकाश व्यवस्था के लिए जहाँ दीप, मशालों इत्यादि का प्रयोग किया जाता था वहीं आज यह इसका विकसित रूप देखने को मिलता है. आज प्रकाश विन्यास रंगमंच का सहायक तत्व न रहकर इसके केंद्र में आ चुका है. अत्याधुनिक तकनीकी उपकरणों के माध्यम से मंच पर परिकल्पना से परे दृश्यों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है| आज लाईट्स के माध्यम से प्रभावी दृश्य तैयार किए जाते हैं. मंच पर रंगों का भी अपना एक दार्शनिक पक्ष होता है और प्रत्येक रंग शब्द विस्तार करने में सहायक होते हैं।

आधुनिक रंग आलोकन में नित होते बदलाव, नवीन उपकरणों के विकास एवं तकनीकि माध्यमों की बढ़ती उपलब्धता ने आज रंगमंच की नयी भाषा रंग भाषा को गढ़ा है। आज मंच पर

प्रकाश व्यवस्था के माध्यम से कैनवास में रंग भरने जैसा पेंटिंग का निर्माण कर दिया जाता है। दर्शक के समक्ष अत्याधुनिक प्रकाश स्रोतों के माध्यम से प्रभावी दृश्यों का निर्माण किया जाता है। मशाल, दीपों से शुरू हुआ रंग आलोकन का सफर आज एलईडी पार, स्पॉट लाइट जैसे स्रोतों तक आ पहुंचा है और यह विकास जारी है।

विदर्भ प्रान्त महाराष्ट्र के पूर्व भाग में बसा हुआ प्रदेश है. इस प्रदेश को सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक कला गुणों के कारण पहचाना जाता है. यह प्रदेश अपने सांस्कृतिक विरासतों के कारण ज्यादा प्रसिद्द है| महाराष्ट्र का यह क्षेत्र कला की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है| यहाँ कला के विविध रूपों की समृद्ध विरासत देखने को मिलती है. इन कला रूपों में विशिष्ट तौर पर रंगमंच की बात करें तो महाराष्ट्र का यह क्षेत्र अपनी व्यापक रंगमंचीय गतिविधियों के लिए चर्चित है| विदर्भ के 11 जिलों में से तीन जिले अमरावती, नागपुर, वर्धा, अकोला, चंद्रपुर का नाम रंगमंच की अत्यधिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है. यहाँ का रंगमंच अपनी परंपरा और प्रयोग के लिए जाना जाता हैं. रंगमंच का यह प्रयोग कथ्य से लेकर रंगमंच के सहायक तत्व वस्त्र विन्यास, प्रकाश विन्यास इत्यादि तक को विशिष्ट बनाता है।

वर्त्तमान में विदर्भ क्षेत्र में कई प्रकाश विन्यासक है, जिनके प्रभावी कार्य का क्षेत्र न केवल विदर्भ बल्कि विदर्भ से बाहर के क्षेत्रों में भी चर्चित है. आज विदर्भ के रंगमंच में अत्याधुनिक रंग उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, जिससे यह क्षेत्र प्रकाश विन्यास के मामले में देश के अन्य क्षेत्रों में भी अपनी पहचान स्थापित कर रहा है।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से रंग आलोकन के पारंपरिक स्रोतों, अवधारणा एवं स्वरूप, प्रकाश विन्यास की आधुनिक तकनीकों इत्यादि पर प्रकाश डालते हुए। विदर्भ के रंगमंच में प्रकाश विन्यास की विशिष्टता एवं प्रयोगों पर प्रकाश डाला गया है. इस विषय के सभी पक्षों को बारीकी से प्रस्तुत करने हेतु विदर्भ क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्रों के के प्रकाश विन्यासकों, रंग निदेशकों, रंग समीक्षकों के साक्षात्कार के दृष्टिकोण को भी रखा गया है।

सम्पूर्ण शोध को चार अध्याय में विभक्त किया गया है-

प्रथम अध्याय '**प्रस्तावना एवं साहित्य पुनरावलोकन**' में शोध विषय से संबन्धित पुस्तकों, आलेखों इत्यादि का जिक्र किया गया। अध्याय में शोध विषय के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा है।

द्वितीय अध्याय '**रंगमंचीय आलोकन की अवधारणा एवं परंपरा**' में रंग आलोकन की अवधारणा, रंग आलोकन की परंपरा, प्रकाश विन्यास का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक स्वरूप, संस्कृत रंगमंच से आधुनिक समय तक रंग आलोकन के क्षेत्र में स्रोतों एवं माध्यमों में हुए बदलाव पर पर प्रकाश डाला है।

तृतीय अध्याय '**आधुनिक रंगमंच में आलोकन विस्तार तथा प्रयोग**' में आधुनिक रंगमंच में प्रकाश विन्यास का स्वरूप, आधुनिक प्रकाश स्रोतों एवं उनके प्रयोग इत्यादि को प्रस्तुत किया है। अध्याय में प्रकाश के आधुनिक स्रोतों के तकनीकि एवं व्यवहारिक पक्ष को रेखांकित किया गया है। अध्याय में प्रकाश स्रोतों के मंचीय उपयोग, स्रोतों की महत्वता एवं प्रभाव पर भी प्रकाश डाला गया है। अध्याय में रंग आलोकन के विविध पहलुओं पर प्रकाश विन्यासकों, रंग समीक्षकों, रंग निर्देशकों, दर्शकों का दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय '**विदर्भ क्षेत्र के रंगमंच के प्रकाश विन्यास का स्वरुप एवं विशिष्टता**' में विदर्भ क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक इतिहास को रेखांकित करते हुए रंग आलोकन की दृष्टि से विदर्भ क्षेत्र की रंग परंपरा पर प्रकाश डाला गया है। अध्याय में झाड़ी पट्टी क्षेत्र की रंग परंपरा में प्रकाश विन्यास की विशेषता तथा वर्तमान समय में रंग समूहों एवं रंग आलोकन की विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में विदर्भ क्षेत्र के रंग विन्यासकों का परिचय एवं उनके कार्यों का भी जिक्र किया गया है।

शोध की प्रासंगिकता :-

रंग तत्वों की दृष्टि से रंगमंच का समय अपने उतरोत्तर विकास की और है. नवीन तकनीकि माध्यमों ने भारतीय रंगमंच को नई रंग भाषा प्रदान की साथ ही विश्वपटल पर भारतीय रंगमंच को स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रंगमंच के अति महत्वपूर्ण तत्व प्रकाश व्यवस्था में नित हो रहे बदलावों, बदलते प्रकाश स्रोतों ने रंगमंच की नयी तस्वीर को प्रस्तुत किया है, जो किसी वस्तु को प्रकाश में लाने भर से आगे आकर अब वातावरण निर्माण इत्यादि का कार्य करता है।

प्रस्तुत शोध में भारतीय रंगमंच के प्रसिद्द प्रकाश विन्यासकों, रंग हस्ताक्षरों, समीक्षकों की दृष्टि को रखा गया है साथ ही रंगमंच पर प्रकाश विन्यास के प्रभाव को लेकर दर्शकों का दृष्टिकोण इस शोध को आधार प्रदान करता है. प्रकाश विन्यास के विशाल फलक को समझने में यह शोध आने वाले शोधार्थियों, कला प्रेमियों के लिए रंग दस्तावेज का कार्य करेगा.

शोध प्रश्न

प्रस्तुत शोध से जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्न, जिनके आधार पर शोध को दिशा प्राप्त हुई-

- मंच आलोकन की अवधारणा एवं इसका स्वरूप क्या है?
- रंगमंच में प्रकाश व्यवस्था की परंपरा क्या है और इसका विकास किस-किस रूप में हुआ?
- प्रकाश व्यवस्था का उद्देश्य एवं इसका महत्व रंगमंच पर किस प्रकार है और इसकी क्या विशेषता है?

- आधुनिक रंगमंच में प्रकाश व्यवस्था में कौन-कौन से नवीन उपकरण आज उपलब्ध है और इनकी विशिष्टता क्या है?
- विदर्भ क्षेत्र में मंच आलोकन का इतिहास एवं इसकी विशिष्टता और स्वरूप क्या है ?

परिकल्पना

- रंगमंच पर प्रकाश विन्यास महत्वपूर्ण सहायक तत्व है. दीप और मशाल से अत्याधुनिक रंग उपकरणों तक की यात्रा में प्रकाश संयोजन आत्याधिक प्रभावी हुआ है. प्रकाश विन्यास के माध्यम से चरित्र को उद्घाटित करने, दृश्य एवं वातावरण इत्यादि निर्माण का कार्य किया जाता है।
- आधुनिक रंगमंच में प्रकाश व्यवस्था का आज प्रभावी रूप देखने को मिलता है। आधुनिक प्रकाश स्रोतों से मंच पर प्रभावी दृश्यों का निर्माण किया जाता है। आज प्रकाश व्यवस्था ने रंगमंच को एक नयी रंग भाषा दी है।
- वर्त्तमान के विदर्भ क्षेत्र में रंगमंच पर अत्याधुनिक रंग उपकरणों का प्रयोग होता है.
- वर्त्तमान प्रकाश विन्यास में वस्तुओं, रंग उपकरणों के मिश्रण से दृश्यों को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया जाता है.

उद्देश्य

- प्रकाश विन्यास रंगमंच का अति महत्वपूर्ण अंग है। हजार वर्षों के रंगमंचीय इतिहास में प्रकाश व्यवस्था का स्वरूप पूर्ण रूप से बदला है। मशाल से लेकर आज के अत्याधुनिक

प्रकाश स्रोतों ने रंगमंच की तस्वीर को बदला है। प्रस्तुत शोध प्रकाश विन्यास की अवधारणा, मंच आलोकन के इतिहास एवं इसके वर्तमान स्वरूप को प्रस्तुत करता है।

- आधुनिक रंग आलोकन में अत्याधुनिक प्रकाश स्रोत वस्तु को उद्घाटित करने तक सीमित नहीं रह गए हैं बल्कि आज अत्याधुनिक माध्यमों से प्रभावी दृश्य निर्माण एवं मंच पर विविध वातावरण का निर्माण किया जाता है। प्रस्तुत शोध इन सभी तकनीकि विशेषताओं को भी रेखांकित करते हुए विदर्भ क्षेत्र के रंगमंच पर प्रकाश विन्यास के बदलते स्वरुप पर प्रकाश डालता है।
- प्रस्तुत शोध में वर्तमान समय में विदर्भ क्षेत्र के मंच आलोकन की विशेषताओं और इसके बदलते स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है।

शोध की सीमा एवं संभावनाएं

- रंगमंच में प्रकाश विन्यास की समृद्ध परंपरा है जहाँ तक भारतीय रंगमंच में प्रकाश विन्यास विन्यास का पक्ष तो यह क्षेत्र अत्यंत व्यापक है अतः शोध में विदर्भ क्षेत्र के रंगमंच पर प्रकाश विन्यास को केंद्र में रखा गया है.
- यह शोध विदर्भ क्षेत्र के रंगमंच के प्रकाश विन्यास की विशिष्टता को सभी के समक्ष प्रस्तुत करेगा जिससे इस क्षेत्र में प्रकाश विन्यास की दृष्टि से हो रहे कार्य और भविष्य में इन पर शोध की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- यह शोध भविष्य में प्रकाश विन्यास पर कार्य करने वाले शोधार्थियों, रंगकर्मियों एवं अकादमिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शोध प्रविधि

- प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति मात्रात्मक एवं गुणात्मक शोध प्राविधि हैं| प्रस्तुत शोध में क्षेत्र सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया जाएगा साथ शोध विषय से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग सहायक रूप में किया जाएगा.

तथ्य संकलन-

प्राथमिक स्रोत -

अवलोक विधि (observation)

साक्षात्कार (Interview)

प्रश्नावली विधि (Questionnaire) आदि।

द्वितीयक स्रोत -

विषय से संबन्धित प्रकाशित पुस्तकें, पत्रिकाओं के आलेख, वीडियो तथा अन्य स्रोतों का अध्ययन।

साहित्य पुनरावलोकन

किसी भी शोध कार्य को करने से पूर्व उससे संबंधित साहित्य का अध्ययन, समस्या के बारे में कुछ विशिष्ट प्रकृति के विषय में महत्वपूर्ण जानकरी प्राप्त करने में सहायक होता है. अध्ययन के समय ऐसी अनेक परिस्थितियां सम्मुख आती है, जिन्हें पार करने के लिए निर्धारित योजना का विकल्प अन्वेषित करना पड़ता है. अतः ऐसी समग्र परिस्थितियों का ज्ञान होना परमआवश्यक है ताकि पहले से ही विकल्पों की समुचित व्यवस्था की जा सके. इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन के द्वारा शोधकर्ता यह जानने का प्रयास करता है कि भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अध्ययन को किन-किन दिशाओं में मोड़ने से अभीष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है.

पुनरावलोकन का अर्थ उन विभिन्न प्रकार की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, लेख, संगोष्ठी, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध ग्रंथों, ज्ञान कोशों तथा अभिलेखों से हैं, जिनके अध्ययन से शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पना के निर्माण, अध्ययन की प्ररचना बनाने एवं कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है. शोधकर्ता को अपने विषय में जब तक यह ज्ञान नहीं होगा कि सैद्धांतिक व् क्रियात्मक दृष्टि से कितना कार्य, किस विधि से किया जा चुका है तथा उसके निषकर्ष क्या निकले हैं, तब तक न तो वह समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी प्ररचना तैयार करके कार्य को आगे बढ़ा सकता है.

साहित्य का पुनरावलोकन किसी शोध प्रकरण पर चयनित दस्तावेज तथा दस्तावेजों का प्रभावशाली मूल्यांकन है. अर्थात शोध कार्य का पुनरावलोकन शोधार्थी द्वारा पूर्व में किए गये शोध कार्य का व्यवस्थित एवं आलोचनात्मक संश्लेषण है. संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता में अपने

शोध कार्य के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है, कार्य की पुनरावृत्ति से बचता है तथा संभावित कठनाइयों के प्रति सजग रहता है. इसके साथ ही प्राप्त परिणामों की तर्कसंगत विवेचना कर परिणामों/निष्कर्षों को युक्तिसंगत बनाता है.

साहित्य का पुनरावलोकन करने का उद्देश्य शोध कार्य के लिए एक निश्चित वातावरण प्रदान करना तथा शोध कार्य की सार्थकता की दृष्टि प्रदान करता है. यह सुनिश्चित करना कि इस प्रकार का कार्य पहले नहीं हुआ या किया जाने वाला कार्य महज पुनरावृत्ति नहीं है. संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अपनी शोध समस्या को विशिष्ट स्वरूप देना और समस्या परिवर्तित रूप में प्रस्तुत करना संभव होता है. पूर्व में किए गए शोध कार्य का अध्ययन वर्तमान में किए जाने वाले शोध अध्ययन के अंतराल तथा प्रसंगिककता को प्रतिपादित करना होता है.

प्रस्तुत शोध विषय 'विदर्भ क्षेत्र के रंगमंच में प्रकाश विन्यास के बदलते स्वरूप का अध्ययन' को लेकर शोध कार्य नहीं हुआ है. यह अवश्य है कि प्रकाश विन्यास पर आधारित आलेख एवं आधुनिक नाटक एवं रंगमंच से संबंधित पुस्तकें आधार रूप में प्राप्त होती है.

Stagecraft (The Complete Guide to Theatrical Practice): Trevor R. Griffiths

मंच विन्यास की अवधारणा उसके स्वरूप को बारीकी से प्रस्तुत करती है यह एक संपादित पुस्तक है, जिसका सम्पादन ट्रेवर आर ग्रिफिथ्स ने किया है। आठ से अधिक सह-संपादकों की सहायता से प्रकाशित इस पुस्तक में निर्देशन, मंच प्रबंधन, अभिनय, मंच विन्यास, प्रकाश विन्यास, वस्त्र विन्यास,

मुख सज्जा, कार्यशाला, नाट्य चयन इत्यादि रंगमंच के महत्वपूर्ण विषयों को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध की दृष्टि से पुस्तक में प्रकाश पर दिया गया अध्याय अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्याय में प्रकाश की अवधारणा, रंगमंच पर प्रकाश के स्रोतों इसके तकनीकि एवं व्यवहारिक पक्ष पर विस्तार से चर्चा है।

मंच आलोकन- जी.एन.दासगुप्ता, अनुवाद- अजय मलकानी

हिन्दी में मंच आलोकन पर उपलब्ध महत्वपूर्ण पुस्तक जी.एन.दासगुप्ता द्वारा लिखित 'मंच आलोकन है'। पुस्तक में रंग आलोकन पद्धति, परंपरा एवं इसके विकास पर महत्वपूर्ण जानकारी हमे मिलती है। जी. एन. दासगुप्ता पुस्तक के प्राक्कथन में कहते हैं कि यह पुस्तक मुख्य रूप से मंच आलोकन के इतिहास, कला, पद्धति और अभ्यास संबंधी पाश्चात्य आधिकारिक विद्वानों द्वारा लिखित ग्रन्थों के अध्ययन, मनन और समावेशन पर आधारित है।

सम्पूर्ण पुस्तक 12 अध्यायों में विभक्त है। मंच आलोकन के इतिहास से लेकर, प्रकाश स्रोतों, प्रकाश की प्रकृति, प्रकाश के वैज्ञानिक गुण, आलोकन के उद्देश्य, विद्युत, प्रकाश स्रोत, आलोकन के नियंत्रक तत्व, आलोकन विधियाँ, आलोकन की प्रक्रिया इत्यादि का विस्तार से वर्णन इस पुस्तक में देखने को मिलता है।

प्रस्तुत शोध विषय की दृष्टि से यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। गर यूं कहें कि रंग आलोकन पर शोध की दृष्टि से यह प्रमुख स्रोत के रूप में है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। रंग आलोकन के प्रत्येक बिन्दुओं को बारीकी से प्रस्तुत करती है यह पुस्तक विशिष्ट है।

साहनी, दीनानाथ, 'नाट्य-शास्त्र और रंगमंच', प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2011

संस्कृत का नाट्य-साहित्य सबसे प्राचीन है। और भरतमुनि का नाट्य-शास्त्र दुनिया का प्राचीनतम नाट्य-ग्रंथ है। वह आज भी सुरक्षित है। अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं में संस्कृत नाटकों का अनुवाद हुआ है।

हर क्षेत्र में स्थानीय भाषाओं में लोक-नाटक मिलते हैं। इनमें स्थानीय गीत और नृत्य की प्रमुखता होती है। इस तरह के लोक-नाट्यों के रचनाकार और दर्शक स्थानीय व्यक्ति होते हैं। ये लोक-नाट्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे हैं। ये कितने पुराने हैं, यह कहना कठिन है।

नाट्य एक अद्भुतकला है। जब नाटक लिखा जाता है तो वह साहित्य है, मंचित होता है तो वह विज्ञान है, तकनीक है; क्योंकि उसमें अनेक ऐसी विधाओं का समावेश हो जाता है, जो लेखन से अलग होती हैं। मसलन निर्देशन, अभिनय, मंच व्यवस्था, सेट डिजाइन, मेकअप, दरजी के काम, बढ़ई के काम, प्रकाश-संचालन, वस्त्र-विन्यास, ध्वनि-उत्पादन, निर्माण आदि। हिंदी नाट्य एवं रंगमंच का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती यह पुस्तक प्रस्तुत शोध विषय में संस्कृत रंगमंच में मंच आलोकन के अध्ययन संबंधी दृष्टिकोण से उपयोगी है।

राजहंस, रमेश, 'नाट्य प्रस्तुति: एक परिचय', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1997

नाट्य प्रस्तुति: एक परिचय नाट्य प्रस्तुति: एक परिचय रंगकर्म में रुचि रखनेवाले उन सभी व्यक्तियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, जो नाटक के क्षेत्र में नये हैं और नाट्य-विधा के सम्बन्ध में अधिक विस्तृत व गहन जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। इस पुस्तक का रचना-शिल्प इन अर्थों में अधिक पठनीय एवं ग्राह्य है कि इसमें रंगकर्म से सम्बद्ध सभी छोटे-छोटे तथ्यों की सिलसिलेवार चर्चा की गई है, जैसे - अभिनय, निर्देशन, ध्वनि-व्यवस्था, प्रकाश-व्यवस्था, पात्र-चयन, संवाद, दर्शक, रंग-स्थल आदि। इस पुस्तक के माध्यम से हम नाट्य-विधा से विधिवत् परिचित होते हैं और अपनी प्रस्तुतियों को अधिक सम्प्रेषणीय तथा अधिक अर्थवत्तापूर्ण बना सकते हैं।

इस पुस्तक में भारतीय रंग-पद्धति के साथ-साथ पश्चिमी निर्देशकों और प्रस्तोताओं के विचारों और तकनीक का भी वर्णन है। चूँकि आज के नाट्य-मंच का स्वरूप बहुत कुछ 'प्रोसीन्यम' है और यह प्रोसीन्यम थियेटर दरअसल पश्चिमी रंग-पद्धति है, इसलिए पश्चिमी रंग-पद्धति और रंग-परम्परा की चर्चा भी इस पुस्तक के दायरे में है। दोनों ही रंग-पद्धतियों के बुनियादी तत्त्व एक हैं और किसी एक रंग-पद्धति को गम्भीरतापूर्वक समझ लेने से दूसरी को समझना काफ़ी सरल है।

प्रस्तुत शोध विषय की दृष्टि से पुस्तक का अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय 'प्रकाश व्यवस्था' है। इस अध्याय में रमेश राजहंस जी ने प्रकाश के स्वरूप, तकनीकि पक्ष, प्रकाश विन्यास, स्रोतों इत्यादि पर

विस्तार से चर्चा की है। नाट्य-विधा के क्षेत्र में रमेश राजहंस की कृति निश्चय ही अत्यंत महत्वपूर्ण है।

तनेजा, डॉ. जयदेव, 'समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच', तक्षशीला प्रकाशन, दिल्ली, 2002

आधुनिक भारतीय नाटक और रंगमंच के इतिहास में सन 1960 से 1970 तक का समय अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के सदैव याद किया जाएगा. यह समय रंगमंच पर अपने व्यापक प्रयोगों, भारतीय रंगमंच की खोज एवं विशुद्ध रूप से नई रंग भाषा के तलाश हेतू जाना जाता है. तनेजा जी ने इस पुस्तक में वर्तमान समय के प्रसिद्द रंग निर्देशकों, रंग आंदोलनों, एवं निजी आधुनिक रंगमंच की खोज को रेखांकित किया है

तनेजा, जयदेव, 'आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2010

नाट्य-समीक्षक **डॉ. जयदेव तनेजा** जी ने "**आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श**" पुस्तक में ऐसे नाटककारों और नाटकों की समीक्षा की है जो वर्षों से अपनी सार्थकता और प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। इन भारतीय नाटककारों का आधुनिक नाट्य-परिदृश्य को बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। **जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, जगदीशचन्द्र माथुर, भीष्म साहनी, बी.एम. शाह, बादल**

सरकार, **जे.पी. दास**, **विजय तेन्दुलकर**, **महेश एल्कुंचवार** आदि के दीर्घजीवी अथवा कालजयी उन श्रेष्ठ नाट्यलेखों को तनेजा जी ने समीक्षा के लिए चुना है, जो अपनी बहुमंचीयता से अपनी महत्ता, प्रासंगिकता और बहुअर्थगर्भी सार्थकता सिद्ध कर चुके हैं और जिनकी संभावनाएं अभी चुकी नहीं हैं।

डॉ. जयदेव तनेजा रचित यह पुस्तक पांच खंडों में बंटी है। **पहले खंड** में भारतीय परिप्रेक्ष्य में, नाटक के विविध रूपों, आधुनिकता और समाज और नाटक में स्त्री विमर्श पर लेख हैं। **दूसरे खंड** में संस्कृत, लोक और पारसी नाटकों के आधुनिक रंग प्रयोगों पर चर्चा की गई है। इसी खंड में जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, जगदीशचन्द्र माथुर, भीष्म साहनी, बी.एम. शाह की विशेष रंग-दृष्टि पर प्रकाश डाला गया है।**तीसरे खंड** में , बादल सरकार, जे.पी. दास, विजय तेन्दुलकर, महेश एल्कुंचवार की रचनात्मकता के साथ उनके वैचारिक दृष्टिकोण पर समग्रतः नज़र डाली गई है।**चौथे खंड** में बहुमंचित प्रमुख आधुनिक नाटकों के सरोकारों, समस्याओं, शक्ति और सीमाओं की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। **पांचवें** और अंतिम खंड में मीरा कान्त, नादिरा ज़हीर बब्बर, शाहिद अनवर और मानव कौल के नाट्य़ कर्म पर विशेष रूप से आलोचनात्मक दृष्टिपात किया गया है।

इस पुस्तक में नाट्य समीक्षक जयदेव तनेजा ने कुछ उभर चुके और उभर रहे उन युवा नाटककारों, जैसे **मीरा कन्त**, **नादिरा ज़हीर बब्बर**, **शाहिद अनवर**, **मानव कौल**, आदि की चर्चा भी की है, जिसे वे भावी भारतीय नाट्य-कर्म की समृद्ध संभावना के रूप में पहचाना है।

रस्तोगी, गिरीश, 'बीसवीं शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2004

बीसवीं शताब्दी का हिन्दी रंगमंच अनेक हलचलों आन्दोलनों और अन्वेषणजन्य नये-नये प्रयोगों से भरा हुआ है। यह इतना वृहद और विविधता लिये है कि पूरी शताब्दी के नाटक और रंगमंच दोनों का समग्र आकलन एक चुनौती बन गया है।

बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच अपने-आप में बहुत बड़ा कैनवेस है। इस लम्बे काल की नाट्य-यात्रा में बहुत सारे उतार-चढ़ाव और कई दिलचस्प मोड़ आये हैं। एक ओर हमारी समृद्धि नाट्य-परम्पराएँ और दूसरी ओर युग-परिवर्तन की माँग के कारण पश्चिम से आते आधुनिक प्रभावों और प्रवृत्तियों का यह क्रान्तिकारी समय है। इस लम्बी यात्रा में नाट्यशास्त्र, लोकनाट्य, पारसी नाटक, असंगत नाटक, यथार्थवादी नाटक, नुक्कड़-नाटक आदि विभिन्न प्रवृत्तियों और रंग-प्रयोगों की विविधता और जटिलता के साथ नाटक और रंगमंच दोनों ने अपने-अपने रास्ते तलाशे।

बीसवीं शताब्दी के नाटक और रंगमंच का इतिहास-मात्र यह पुस्तक नहीं है, विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित कुछ लेख हैं जिनका उपयोग पुस्तक की परिकल्पना और रचना के अनुसार किया है लेकिन बहुत से पक्षों पर पुनः आज के सन्दर्भ में चिन्तनपरक दृष्टि से नये-नये बिन्दुओं और मौलिक प्रश्नों को उठाया गया है जैसे कविता मंचन, कथा मंचन, बाल रंगमंच, रंगमंच के स्वरूप और प्रकृति को लेकर। इसलिए नाटक और रंगमंच के उस इतिहास से-वह भी बनते जाते, पुनः सृजित इतिहास के बीच से उठते सवालों से टकराने की कोशिश ज्यादा है जो नाटक रंगमंच, आलोचना, कला, चिन्तन और

सृजन में उठते रहे हैं। दृश्यात्मक विधा में उनका उठना और भी स्वाभाविक और अनिवार्य है। इसलिए प्रायः चिन्तन-पुनर्चिन्तन की प्रक्रिया से गुजरना लाजिमी है।

प्रस्तुत आधुनिक रंगमंच पर नए रंग प्रयोगों को प्रस्तुत करते हुए इसके विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालती है.

तनेजा, जयदेव, (संपादक) 'नाट्य विमर्श', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2012

नाट्य विमर्श मोहन राकेश हिन्दी के निरीह-से सामान्य नाटककार भर न होकर 'थिएटर एक्टीविस्ट' भी थे। इसीलिए उनके 'नाट्य-विमर्श' का दायरा केवल नाटक-लेखन और उससे जुड़े सवालों के शास्त्रीय-सैद्धान्तिक विवेचन-विश्लेषण तक ही सीमित नहीं था। उनकी प्रमुख चिन्ता आधुनिक भारतीय रंग-दृष्टि की तलाश/उपलब्धि और उसके विश्व- स्तरीय विकास की थी। यही कारण है कि वह एकांकी, रेडियो नाटक, नाट्यानुवाद और हिन्दी नाटक तथा रंगमंच का ऐतिहासिक विकास-क्रम से समग्र विवेचन करने के बाद सीधे 'नाटककार और रंगमंच', 'रंगमंच और शब्द', 'शब्द और ध्वनि' तथा शुद्ध और नाटकीय शब्द की खोज के साथ-साथ रंगकर्म में शब्दों की बदलती भूमिका को रेखांकित करते हैं। यही नहीं, समकालीन हिन्दी रंगकर्म की अनेक व्यावहारिक समस्याओं से जूझने के साथ-साथ राकेश फ़िल्म और टेलीविजन की लगातार बढ़ती प्रत्यक्ष चुनौतियों के समक्ष रंगमंच के मूल तर्क और भविष्य के बारे में भी गम्भीर चिन्तन-मनन करते हैं। स्पष्ट है कि राकेश का नाट्य-विमर्श स्वानुभव पर आधारित, गम्भीर, बहुआयामी और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। परन्तु इस

विषय से सम्बद्ध राकेश की सारी सामग्री अब तक हिन्दी-अंग्रेज़ी की पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों में लेखों, साक्षात्कारों, टिप्पणियों, प्रतिक्रियाओं, परिसंवादों एवं समीक्षाओं के रूप में इधर-उधर बिखरी होने के कारण सहज उपलब्ध नहीं थी। यहाँ राकेश के नाट्य- विमर्श को, उसकी चिन्तन-प्रक्रिया के विकास-क्रम में, एक साथ प्रकाशित किया गया है। आशा है, यह पुस्तक मोहन राकेश के प्रबुद्ध पाठकों, अध्येताओं और रंगकर्म के साहसी प्रयोक्ताओं, प्रेक्षकों-समीक्षकों के लिए निश्चय ही उपयोगी और सार्थक होगी।

प्रस्तुत पुस्तक में रंगमंच से संबन्धित कई विषयों पर चर्चा है, जो प्रस्तुत शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अंकुर, देवेन्द्र राज, 'अतरंग बहिरंग', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

पुस्तक 'अंतरंग बहिरंग' में नाटक की दर्शकीयता, नाटक का अध्ययन और अध्यापन, रंगमंच और नाटक, हिन्दी में मौलिक नाटक लेखन की समस्याएँ, भारतेंदु का रंग-चिंतन, नाटककारों के सामाजिक सरोकार, रंगमंच और नारी तथा दलित, मृच्छकटिकम और यहूदी की लड़की की प्रस्तुतियों का अध्ययन, आदि विषयों को छूते हुए देवेंद्र राज अंकुर ने हिन्दी में आधुनिक नाट्य विमर्श की कमी को दूर किया है। देवेंद्र राज अंकुर गत कई दशकों से भारतीय रंगमंच और खासतौर से हिन्दी थिएटर के साथ गहराई के साथ जुड़े हैं।

'आज जरूरत इस बात की है कि रंगमंच और संचार माध्यमों को परस्पर विरोधी तत्वों के रूप में न देखकर एक-दूसरे के पूरक तत्वों के रूप में देखा जाए ताकि भावी नाटक और रंगमंच की एक ऐसी परिकल्पना को साकार रूप में दिया जा सके जिसमें शब्द भी हों, अभिनेता भी हों और दोनों के सामंजस्य से बनते-सँवरते दृश्य भी हों। तामझाम हो या न हो यह उसका निर्णायक कारक तत्व नहीं होना चाहिए।'

रंगमंच के विविध पहलुओं पर रोशनी डालती विख्यात नाट्य चिंतक व निर्देशक देवेंद्र राज अंकुर की यह पुस्तक हिन्दी की एक उपलब्धि के रूप में देखी जानी चाहिए। इस पुस्तक में उन्होंने नाटक में लेखन से लेकर उसकी प्रस्तुति तक के विभिन्न पड़ावों को लेकर विचार किया है। इस पुस्तक के माध्यम से देवेंद्र राज अंकुर ने विभिन्न नाटकों की प्रस्तुतियों के विश्लेषण तथा थिएटर के इतिहास और वर्तमान की विभिन्न समस्याओं पर अपने निर्णायक विचार हिन्दी जगत को दिए हैं।

तनेजा, जयदेव, 'रंग साक्षी', तक्षशीला प्रकाशन, दिल्ली

हिंदी रंगमंच की आधी शती को कवर करती यह किताब नाटक की आलोचना पर केंद्रित न होकर मंच प्रस्तुति पर आधारित है.

चार खंडों की किताब में भारतीय विशेषतः हिंदी रंगमंच की लगभग आधी शती को शामिल किया गया है. इस दृष्टि से रंगमंच के शोधार्थियों के साथ-साथ सामान्य दर्शकों के लिए भी यह स्रोत सामग्री अत्यंत महत्व की है. कुल 1,000 प्रस्तुतियों की रिपोर्ट सचमुच सराहनीय प्रयास है.

पहले खंड में पांच नाटकों पर विस्तृत लेख हैं जो उनकी प्रस्तुतियों के बहाने लिखे गए हैं. ये नाटक हैः आषाढ़ का एक दिन, आधे अधूरे, तुगलक, अंधा युग और चरणदास चोर. इन नाटकों की प्रस्तुति हिंदी रंगमंच की उल्लेखनीय घटना रही है. चरणदास चोर प्रस्तुति के रूप में भले चर्चित हुआ लेकिन उसके आलेख पर ज्यादा विमर्श नहीं हुआ. इस सूची में अगर एक-एक नाटक विजय तेंडुलकर और बादल सरकार का होता तो भारतीय रंगमंच की यह तस्वीर पूरी हो जाती.

दूसरा खंड उस इतिहास की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है जिसके तहत 1974 से 2007 तक की लगभग हर नाट्य प्रस्तुति की रपट और आलोचना साथ-साथ मिल जाती है. ऐसी रपटों के लिए लेखक ने वीक्षा शब्द का प्रयोग किया है, जिसका नोटिस लिया जाना जरूरी है. यों शब्द की अवधारणा से ज्यादा इस खंड में उपलब्ध सामग्री के दस्तावेजी महत्व को ध्यान में रखा जाना चाहिए. पिछले बीस-पच्चीस वर्षों में भारतीय रंगमंच में नाट्य समारोहों की बाढ़-सी आ गई है. अब हर नाट्य मंडली समारोह के लिए ही नाटक तैयार करती है. वह दौर तो दुर्लभ ही हो गया है, जब कोई नाट्य दल अपनी इच्छा, अपने संसाधनों और अपने कार्यक्रम के अनुसार नाटक का मंचन करे. कुल मिलाकर 75 नाट्योत्सवों के विवरण से उपर्युक्त स्थापना की ही पुष्टि होती है.

किताब के अंतिम खंड में अठारह रंग वर्षों का वार्षिक आकलन है. साहित्य की दूसरी विधाओं की तरह रंगमंचीय वार्षिक रिपोर्ट और आकलन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से हमारा वर्ष दर वर्ष चलते रंगमंच के मुहावरे और तेवर से साक्षात्कार होता है.

तनेजा, जयदेव, 'मोहन राकेश: रंग शिल्प और प्रदर्शन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002

मोहन राकेश: रंग-शिल्प और प्रदर्शन मोहन राकेश आधुनिक हिन्दी रंगकर्म की एक विशिष्ट, उत्प्रेरक और प्रखर प्रतिभा थे। उनके नाटकों के तिलिस्म को तोड़ने और उनके वास्तविक महत्त्व को जानने की कुंजी उनके सूक्ष्म, जटिल एवं सम्मोहक रंग-शिल्प में छिपी है। एकाध अपवाद को छोड़कर समकालीन हिन्दी/भारतीय रंगमंच का शायद ही कोई उल्लेखनीय निर्देशक या कलाकार होगा जिसने कभी राकेश का कोई छोटा-बड़ा नाटक न किया हो।

इस पुस्तक में पहली बार नाटककार राकेश के रंग-शिल्प के गहन-गम्भीर विश्लेषण के साथ-साथ हिन्दी के अतिरिक्त मराठी, बांग्ला, कन्नड़, गुजराती, पंजाबी, असमिया, मणिपुरी और अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं में अलग-अलग नाट्य-शैलियों, रंग-रूपों तथा मौलिक व्याख्याओं के साथ देश-विदेश में की गई उनके नाटकों की बहुसंख्य प्रभावशाली प्रस्तुतियों का तथ्यांकन और विवेचन भी किया गया है।

राकेश के नाटकों और प्रदर्शनों ने आधुनिक हिन्दी रंगान्दोलन को विकसित एवं समृद्ध करने में ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया है। इस भूमिका के सन्दर्भ में ही यहाँ राकेश के महत्त्व और योगदान को रेखांकित करने का प्रयत्न हुआ है।

यह पुस्तक नाटक-रंगमंच समन्वित उस संश्लिष्ट रंग-समीक्षा दृष्टि की ओर इशारा करने की पहल करती है, जिसके बिना किसी भी नाटक का वास्तविक और सन्तुलित मूल्यांकन हो ही नहीं सकता। चिरजीवी नाटककार मोहन राकेश के रंग-शिल्प और प्रदर्शन के बहाने यह पुस्तक समकालीन

हिन्दी/भारतीय रंगकर्म की उस गम्भीर, वैविध्यपूर्ण और व्यापक सर्जनात्मक छटपटाहट को भी उजागर करती है, जो किसी भी सार्थक रचना-कर्म की बुनियादी शर्त है। रंगकर्मियों, शोधार्थियों, अध्यापकों एवं छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी और राकेश के रंग-परिवेश के जिज्ञासु पाठकों/इतिहासकारों के लिए एक दिलचस्प, प्रामाणिक तथा संग्रहणीय दस्तावेज़ी ग्रन्थ।

आनंद, महेश, 'रंगमंच के सिद्धांत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

रंगमंच के सिद्धान्त हिन्दी में एक ऐसी पुस्तक की लम्बे समय से प्रतीक्षा थी जो पूर्व और पश्चिम में प्रचलित नाट्य सिद्धान्तों को एक स्थान पर और सुग्राह्य भाषा में उपलब्ध कराती हो। 'रंगमंच के सिद्धान्त' इसी उद्देश्य की पूर्ति करती है।

समकालीन रंगमंच के अध्येता महेश आनन्द तथा रंगकर्म के व्यावहारिक और सैद्धान्तिक पक्षों का एक-सी निष्ठा के साथ निर्वाह करते आ रहे सुपरिचित रंगकर्मी देवेन्द्र राज अंकुर के कुशल संपादन में तैयार इस पुस्तक में अरस्तू से लेकर भारतेन्दु और फिर बादल सरकार तक के रंग सिद्धान्तों का विवेचन अधिकारी विद्वानों और रंगकर्मियों द्वारा किया गया है।

यह पुस्तक बताती है कि रंगमंच केवल किसी नाट्य कृति को अभिनेताओं द्वारा मंच पर खेल देना भर नहीं होता। समाज, मनुष्य, उसकी मनोरचना और नियति के साथ रंगमंच के सम्बन्ध को लेकर हर युग में चिन्तक और रंगकर्मी चिन्तन-मनन करते रहे हैं और मानव-जीवन की एक अधिकाधिक विश्वसनीय प्रतिकृति के रूप में रंगकर्म को स्थापित करने के लिए नई-नई शैलियाँ ढूँढ़ते और विकसित

करते रहे हैं। उन तमाम सिद्धान्तों-शैलियों को प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है जो अपने समय में रंगकर्म के लिए दिशा-निर्देशक बने और आज भी हमारी सोच को उत्तेजित करते हैं।

जिन विचारकों के सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया है, वे हैं: अरस्तू, स्तानिस्लाव्स्की, मेयरहोल्ड, आर्तो, ब्रेष्ट, क्रेग, माइकेल चेख़व, ग्रोतोव्स्की, पीटर ब्रुक, ज़ेआमि, भरत, भारतेन्दु, प्रसाद और बादल सरकार।

सुलभ, हृषिकेश, 'रंगमंच का जनतंत्र', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2009

रंगमंच का जनतन्त्र रंगमंच का जनतन्त्र ऐसी रचनाओं का संकलन है, जो रंगमंच की जनतान्त्रिकता को गहराई से रेखांकित करती हैं।

यह अतीत और वर्तमान की यायावरी है। इस यात्रा में समय, समाज, जीवन और रंगमंच के कई पहलू उद्घाटित होते हैं। इन रचनाओं का भूगोल काफी विस्तृत है। यहाँ संस्कृत रंगमंच की महान परम्परा से लेकर आज के रंगमंच तक की अर्थवान छवियाँ अंकित हैं। इनमें एक ओर विदूषक और सूत्रधार जैसे रूढ़ चरित्रों तथा पूर्वरंग जैसी रंगरूढ़ियों का विश्लेषण है, तो दूसरी ओर भाषा संगीतकों के उदय, पारसी रंगमंच के अवसान, आजादी के बाद की रंगचेतना आदि की विवेचनात्मक पड़ताल है। समय के अन्तरंग में उतरकर अपनी रंगसम्पदा को जानने-समझने की जिद करती ये रचनाएँ पाठकों से आत्मीय संवाद कायम करती हैं।

शास्त्रीयता, पारम्परिकता, महाकाव्यात्मकता, कालविद्धता और जनपक्षधरता की खोज में हृषीकेश सुलभ कई अजाने रास्तों से भी गुजरते हैं और नए अन्तर्विरोधों की तरफ संकेत करते हैं।

समय और समाज को अभिव्यक्त करने के लिए नई रंगभाषा, रंगदृष्टि, रंगयुक्तियों आदि की खोज करते हुए वह समकालीन रंगमंच की समस्याओं-चिन्ताओं से टकराते हैं और हमारे समय का रंगविमर्श रचते हैं। अपनी बात कहने के लिए हृषीकेश सुलभ ने रंगसिद्धान्तों, रंगव्यक्तित्वों, पुस्तकों, शैलियों, रंगप्रदर्शनों आदि विविध माध्यमों का सहारा लिया है। यह विविधता ही सही अर्थों में रंगमंच का जनतन्त्र की विशिष्टता है।

शुक्ल, वंदना, 'नाटक-क्रमिक विकास, प्रयोग और प्रयोजन (आलेख), अभिव्यक्ति ई पत्रिका

यह आलेख रंग प्रयोगों और उसके विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालता है. आलेख में भारतीय रंग निर्देशकों के कार्य एवं उनके प्रभावों का जिक्र करता है. आलेख में प्रयोग को लेकर उदाहरण सहित व्याख्या की गई है. प्रस्तुत शोध विषय की दृष्टि से आधुनिक रंग प्रयोगों को रेखांकित करने के लिए यह पुस्तक महत्वपूर्ण है।

जैन, नैमिचंद्र, 'रंग दर्शन', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008

आधुनिक भारतीय रंगमंच के वैचारिक आधार क्या हैं-उसकी अपार विविधता का फलितार्थ क्या है-उसमें आधुनिकता और परंपरा के बीच कैसी बतकही और आवाजाही होती रही है आदि ऐसे प्रश्न हैं जो आधुनिक भारतीय रंगदृष्टि को विन्यस्त करने और उसे समझने के लिए जरूरी हैं। हमारी उत्तर-औपनिवेशिक जहनियत की यह विडंबना है कि ऐसे प्रश्न अकसर भारतीय भाषाओं में तीखेपन और बेबाकी के साथ, उत्सुकता और जिज्ञासा से प्रेरित होकर उठाए ही नहीं गए। इन प्रश्नों को जिम्मेदारी और सयानेपन से उठाने की पहल प्रसिद्ध हिंदी कवि-आलोचक और रंगसमीक्षक नेमिचन्द्र जैन ने की : ऐसा पहली बार हिंदी में ही नहीं बल्कि सारी भारतीय भाषाओं में भी पहली बार ही हुआ है। रंगदर्शन उसी का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। तीस बरसों बाद उसका चौथा संस्करण निकलना इस बात का प्रमाण है कि वह आज भी भारतीय रंगमंच के आधुनिक दौर को समझने-बूझने में एक अनिवार्य उपकरण बना हुआ है। रंगदर्शन में जहाँ एक ओर रंगशाला, नाट्य प्रशिक्षण, दर्शक-वर्ग, व्यावसायिकता आदि का गंभीरता से विश्लेषण है, वहाँ दूसरी ओर उसमें नाटक का अध्ययन, रचना-प्रक्रिया, नाट्य-रूप और भाषा, परंपरा की प्रासंगिकता, रंगदृष्टि की खोज आदि मुद्दे उठाकर भारतीय रंगालोचना को पुष्ट बौद्धिक ऊर्जा और आभा देने की कोशिश है। यह अकारण. नहीं है कि हिंदी के अलावा बांग्ला, मराठी, अंग्रेजी आदि में भी इस पुस्तक को दिशादर्शी और महत्त्वपूर्ण माना गया है ।

Richard Pilbrow, Stage Lighting Design: The Art, the Craft, the Life,

रिचर्ड पिलब्रो की यह पुस्तक प्रस्तुत शोध विषय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पुस्तक प्रकाश विन्यास के पूर्ण इतिहास, सिद्धान्त और इसके प्रयोग को समेटती है। 500 से अधिक चित्रों के साथ प्रकाशित यह पुस्तक विन्यास की मूल अवधारणा, महत्वपूर्ण प्रस्तुतियों के विवरण, मंचीय आलोकन के इतिहास को विस्तृत रूप में प्रस्तुत करती है।

Francis Reid, Stage Lighting Handbook

फ्रेंसिस रेड की पुस्तक स्टेज लाईटिंग हैंडबुक व्यहारिक रूप में रंग आलोकन पर मार्गदर्शन करती है। पुस्तक प्रकाश विन्यास की प्रक्रिया, प्रकाश यंत्रों के प्रयोग और प्रस्तुति विशेष पर विस्तार से चर्चा करती है। यह पुस्तक प्रस्तुत शोध विषय की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Neil Fraser- Stage Lighting Design: A Practical Guide

नील फ्रेजर की पुस्तक स्टेज लाईटिंग: अ प्रेक्टिकल गाइड, मंचीय प्रकाश की भूमिका, प्रकाश यंत्रों के तकनीकी परिचय एवं प्रयोग, विन्यास के स्वरूप इत्यादि पर प्रकाश डालती है। इसके अतिरिक्त भी प्रकाश विन्यास एवं इसके व्यवहारिक पक्ष को समझने के लिए यह पुस्तक अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पुस्तक शोध विषय के लिए अत्यंत उपयोगी है, शोध में प्रकाश यंत्रों के तकनीकी पक्ष को रेखांकित करने हेतु इस पुस्तक का आधार महत्वपूर्ण है।

प्रकाश विन्यास, इसकी अवधारण एवं स्वरूप तथा तकनिकी पक्ष को समझने हेतु अन्य महत्वपूर्ण पुस्तक इस प्रकार है-

- Sculpting Space in the Theater by Babak Ebrahimian
- The Broadway Design Roster by Bobbi Owen
- Light on the Subject by David Hays; Peter Brook (Introduction by)
- Technical Theater for Nontechnical People by Drew Campbell
- An Introduction to Color by Evans, Ralph Merril
- Yesterday's Lights: A Revolution Reported by Francis Reid
- The Stage Lighting Handbook by Francis Reid
- Theatre Lighting Before Electricity by Frederick Penzel
- Stage Lighting Revealed by Glen Cunningham
- Theatrical Design and Production by J. Michael Gillette
- Encyclopedia of Stage Lighting by Jody Briggs
- Lighting and the Design Idea by Linda Essig
- Light Fantastic by Max A. Keller

- Lighting and Sound by Neil Fraser; David Mayer (Editor)
- Stage Lighting for Theatre Designers by Nigel H. Morgan
- Scenic Design and Lighting Techniques by Rob Napoli; Chuck Gloman
- A Method of Lighting the Stage by Stanley Russell McCandless
- A Practical Guide to Stage Lighting Third Edition by Steven Louis Shelley
- Scene Design and Stage Lighting by W. Oren Parker; R. Craig Wolf; Dick Block
- Theatre Backstage from A to Z by Warren C. Lounsbury; Norman C. Boulanger
- Lighting the Stage by Willard F. Bellman
- An Introduction to Color by Evans, Ralph Merril
- Automated Lighting by Richard Cadena

- Lighting and Sound by Neil Fraser; David Mayer (Editor)

- A Process for Lighting the Stage by Ian McGrath
- The Business of Theatrical Design by James L. Moody
- Stage Lighting for Theatre Designers by Nigel H. Morgan
- Technical Design Solutions for Theatre by Ben Sammler (Editor); Donald Harvey (Editor)
- Effects for the Theatre by Graham Walne (Editor)
- The New Handbook of Stage Lighting Graphics by William Warfel
- Working Together in Theatre by Robert Cohen
- Collaboration in Theatre by Rob Roznowski; Kirk Domer
- Photometrics Handbook by Robert C. Mumm
- Create Your Own Stage Effects by Gill Davies
- Lighting by Design by Brian Fitt; Joe Thornley
- Automated Lighting by Richard Cadena
- Technical Theater for Nontechnical People by Drew Campbell

- Lighting Technology by Brian Fitt; Joe Thornley
- The Stage Manager's Handbook by Bert Gruver; Frank Hamilton
- Stage Lighting in the Boondocks by James H. Miller; Arthur L. Zapel (Editor)
- Technical Design Solutions for Theatre by Ben Sammler (Editor); Donald Harvey (Editor)
- Effects for the Theatre by Graham Walne (Editor)
- Encyclopedia of stage lighting by Jody Briggs
- A bibliography of theatre technology: acoustics and sound, lighting, properties, and scenery by John T. Howard, Jr.
- Documenting: lighting design by edited by Susan Brady and Nena Couch.
- Lighting design on Broadway : designers and their credits, 1915-1990 by Bobbi Owen

- Bel Geddes, Norman. Miracle in the Evening. Garden City, NY: Double Day and Co., Inc. 1960
- Bergman, Gosta Mauri. Lighting in the Theatre. Stockholm: Almqvist & Wiksell International. 1977
- Fuchs, Theodore. Stage Lighting. New York: B. Blum. 1963 (1929)
- Hartman, Louis. Theatre Lighting: A Manual of the Stage Switchboard. New York: DBS Publications. 1970 (1930)
- Owen, Bobbi. Lighting Designers on Broadway: 1915-1990. New York: Greenwood Press. 1991.
- Owens, Bobbi. Scene Designers on Broadway. New York: Greenwood Press. 1991.
- Pendleton, Ralph. The Theatre of Robert Edmond Jones. Middletown, CT. Wesleyan University Press. 1958
- See B. Hewitt, ed., The Renaissance Stage (1958)

- A. S. Gillette, An Introduction to Scenic Design (1967)
- A. Nicoll, The Development of the Theatre (5th ed. 1967)
- H. Burris-Meyer et al., Scenery for the Theatre (rev. ed. 1971)
- J. Rosenthal and L. Wertenbaker, The Magic of Light (1972)
- S. Rosenfeld, A Short History of Scene Design in Great Britain (1973)
- W. F. Bellman, Lighting the Stage: Art and Practices (2d ed. 1974)
- R. L. Arnold, Scene Technology (1985)
- J. Collins, The Art of Scene Painting (1987)

संबंधित विषय से संबंधित शोध-

1. हिंदी नाट्य रूपों का अध्ययन(ए स्टडीज ऑफ़ हिंदी ड्रेमेटिक फॉर्म्स)- (पी-एच.डी.), १९६०, सुरेशचन्द्र अवस्थी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.
2. भारतीय नाट्य सिद्धांत: उद्भव और विकास, (डी.लिट्.), १९६८, रामजी पाण्डेय, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

3. हिंदी के यथार्थवादी नाटक और नाट्य शैलियाँ, (पी-एच.डी.), १९६९, शांति लाल जैन, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन.

4. आधुनिक हिंदी नाटककारों के नाट्य सिद्धांत, (पी-एच.डी.), १९६३, निर्मल, दिल्ली विश्वविद्यालय.

5. हिंदी के प्रतीकात्मक नाटक: उद्भव और विकास एवं अभिव्यन्जनाशिल्प, (पी-एच.डी.),१९७८, आदित्य कुमार भार्गव, कानपूर विश्वविद्यालय, कानपूर.

6. नाट्य साहित्य और रंगमंच, (पी-एच.डी.),१९६०,वासुदेवनंदन प्रसाद, पटना विश्वविद्यालय, पटना.

7. हिंदी नाट्य रूपों का अध्ययन (स्टडीज़ ऑफ़ हिंदी ड्रामेटिक फॉर्म्स), (पी-एच.डी.),१९६०, सुरेन्द्र अवस्थी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

8. ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ हिस्टारिकल ड्रामाज़ इन हिंदी लिटरेचर, (पी-एच.डी.),१९६१, रामकिशोर श्रीवास्तव, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

9. हिंदी नाटक की शिल्विधि का विकास-(पी-एच.डी.),१९६२,शांति देवी बत्रा, पंजाब विश्वविद्यालय,पंजाब.

10. ए साइकोलिजकल स्टडी ऑफ़ हिंदी ड्रामाज आफ्टर प्रसाद पीरियड, (पी-एच.डी.),१९६३,गणेश दत्त गौड़, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा.

11. हिंदी नाटकों में संगीत, (पी-एच.डी.),१९६४, गिरीश रस्तोगी, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर.

12. हिंदी नाट्य और रंगमंच की मीमांसा: गोविन्द हुलास नाटक, (पी-एच.डी.),१९६५, कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह, नागपुर विशाविद्यालय, नागपुर.

13.बांग्ला, मराठी आवर गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन, (पी-एच.डी.),१९६८ झब्बूलाल सुलतानिया, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा.

14.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों अनुशीलन, (पी-एच.डी.),१९७० रमा मिश्र, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा.